भक्तिभाव के साथ कृष्णभावना में निमग्न-चित हो जाते और इससे नित्य शुद्ध सत्त्व में स्थित रहते हैं। आठवें से ग्यारहवें श्लोक तक भक्तियोग का तथा श्रीकृष्ण की आराधना का अतिशय विशद निर्देश है। शुद्ध भक्ति का यही मार्ग है। इस अध्याय में उस साधन का पूर्ण विवरण है, जिसके द्वारा भक्तियोग की परम संसिद्धि, अर्थात् श्रीभगवान् के संग की प्राप्ति हो जाती है।

**ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगोनाम दशमोऽध्यायः ।।१०।।**

**इति भक्तिवेदान्तभाष्ये दशमोऽध्यायः ।।**